एकाधिकार में कीमत निर्धारण

एकाधिकार के अंतर्गत वस्तु का केवल एकमात्र विक्रेता होता है वस्तु की कीमत का निर्धारण भी एकाधिकारी स्वयं करता है और एकाधिकार का उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है

इस प्रकार साम्य में एक ऐसी स्थिति होती है जहाँ एक फर्म अधिकतम लाभ की प्राप्ति करता है अर्थात जिस बिंदु पर एक फर्म को अधिकतम लाभ की प्राप्ति होता है, वह बिन्दु फर्म के लिए संतुलन का बिंदु होता है।

इस प्रकार यदि हम एकाधिकार की स्थिति की बात करते हैं तो संतुलन निर्धारण के दो रीतियां है-

1. कुल आगम तथा कुल लागत रीति
2. सीमांत आगम तथा सीमांत लागत रीति

कुल आगम तथा कुल लागत रीति (Total Revenue and Total Cost Approach)

इस रीति का प्रतिपादन **प्रो. मार्शल** ने किया। इस रीति के अंतर्गत जिससे स्थान पर कुल आगम तथा कुल लागत के बीच खड़ी हुई दूरी अधिकतम होगी. वहीं एक एकाधिकार को अधिकतम लाभ की प्राप्ति होगी अर्थात साम्य की स्थिति में होगा

इकाई	कीमत प्रति इकाई (₹)	कुल आगम	कुल लागत	कुल लाभ
20	10	200	100	100
40	9	360	160	200
60	8	480	180	300
80	7.50	600	280	320
100	7	700	400	300
120	6	720	600	120
140	5	700	840	-140

सीमांत विश्लेषण रीति (Marginal Analysis Approach)

इस रीति का प्रतिपादन जॉन रॉबिन्स ने किया था

उनके अनुसार, एकाधिकारी अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए सीमांत लागत को सीमांत आय के बराबर करने का प्रयत्न करता है और जिस स्थान पर ये दोनों रेखाएँ बराबर होती है, वहीं कीमत तय होती है। क्योंकि शुद्ध एकाधिकारी की कुल आय उसी स्थिति में अधिकतम होती है।

एकाधिकारी उस स्थिति में अधिकतम लाभ प्राप्त करेगा जब उसकी **तीन शर्तें** पूरी हों:

- सीमांत लागत = सीमांत आय (MC=MR)
- संतुलन के पश्चात सीमांत लागत आय से अधिक हो (MC>MR)
- कीमत औसत परिवर्तनशील लागत के बराबर या उससे अधिक होनी चाहिए (Price> AVC)

समय के आधार पर कीमत निर्धारण

- अल्पकाल में एकाधिकारी कीमत व उत्पादन
- दीर्घकाल में एकाधिकारी कीमत व उत्पादन

अल्पकाल में एकाधिकारी कीमत पर उत्पादन

अल्पकाल में एक अधिकारी की उत्पादन क्षमता निश्चित होती है। वह उत्पादन के वर्तमान साधनों द्वारा होती में वृद्धि कर सकता है। यदि मांग में वृद्धि के कारण कीमत बढ़ती है तो एकाधिकारी एक सीमा तक ही उत्पादन में वृद्धि कर सकता है इसके विपरीत यदि मांग घटने के कारण कीमत घटती है तो एकाधिकारी को अपने प्लांट की उत्पादन क्षमता का एक भाग तक उपयोग ना कर कुछ अंश तक उत्पादन की मात्रा में कमी कर सकता है। ऐसी स्थिति में उसका लाभ काफी कम हो सकता है।

एकाधिकार में अल्पकाल में फर्म की तीन स्थितियां उत्पन्न होती है:-

- एकाधिकारी फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त हो सकता है
- एकाधिकारी को सामान्य लाभ प्राप्त हो सकता है
- एकाधिकारी फर्म को हानि प्राप्त हो सकती है

असामान्य लाभ की स्थिति (Abnormal Profit Condition)

एकाधिकारी उत्पादन तथा कीमत वाहन निर्धारित करेगा जहाँ पर **MR=MC** के होगा

उदाहरण,

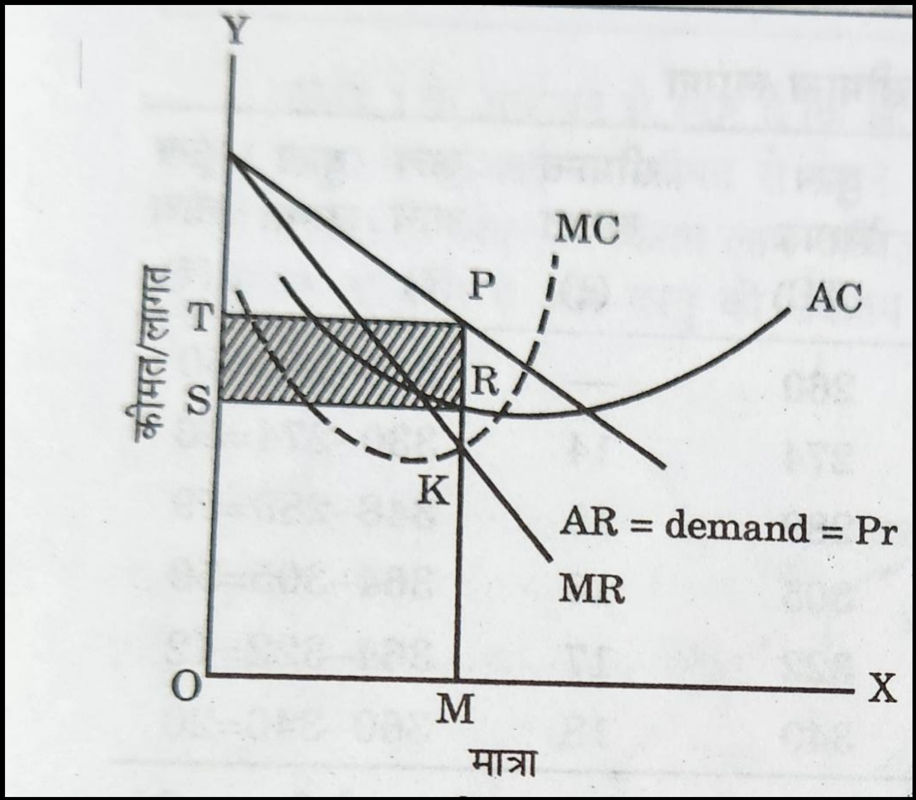

सामान्य लाभ की स्थिति (Normal Profit Condition)

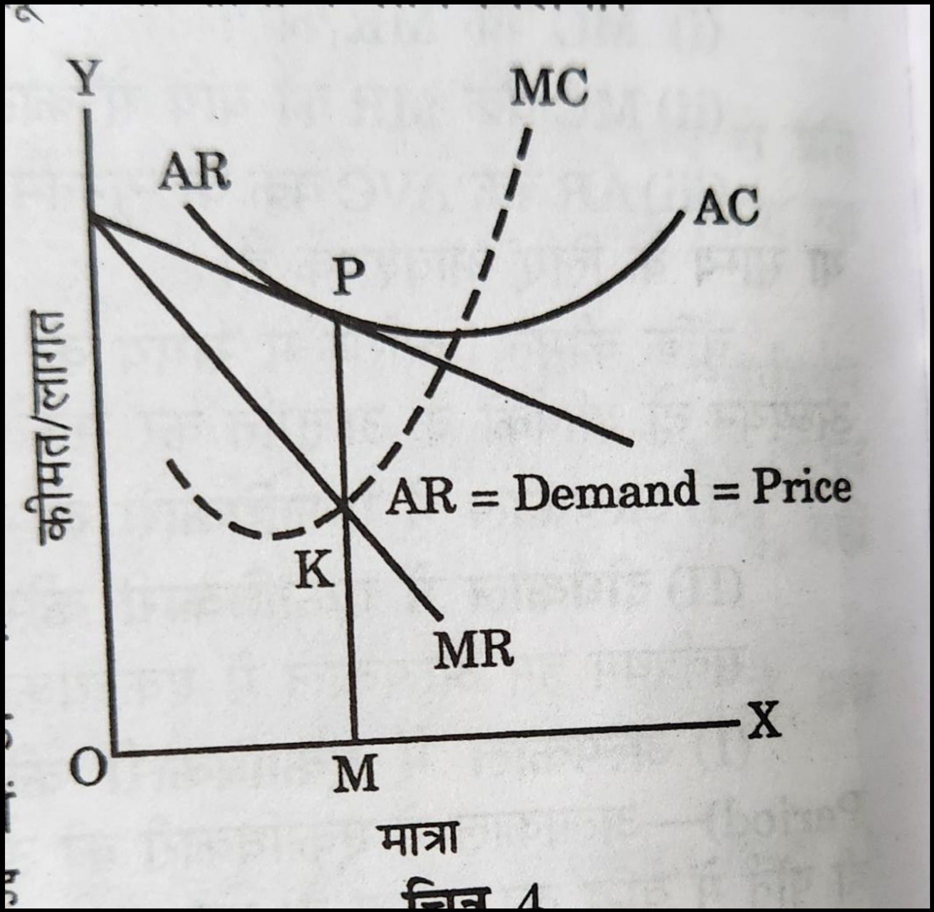

हानि की स्थिति (Condition of Loss)

अल्पकाल में यह आवश्यक नहीं कि एकाधिकारी को सामान्य लाभ से अधिक ही लाभ मिले कारण यह है कि एकाधिकारी कीमत अंतकाल में औसत लागत से भी कम हो सकती है। अल्पकाल में भी वह अपने उत्पादन किया तब तक चालू रखता है जब तक कि उसे औसत परिवर्तनशील लागतो के बराबर कीमत मिलती रहेंगी। यहाँ पर एकाधिकारी के लाभ के स्थान पर हानि होगी। अल्पकाल में उसे उत्पादित वस्तु की कीमत कम से कम औसत परिवर्तन लागत की बराबर प्राप्त होनी चाहिए, नहीं तो उत्पादन कार्य नहीं करेगा । इस प्रकार एकाधिकारी अधिकाधिक हानि के स्थिर लागत के बराबर हो सकती हैं।

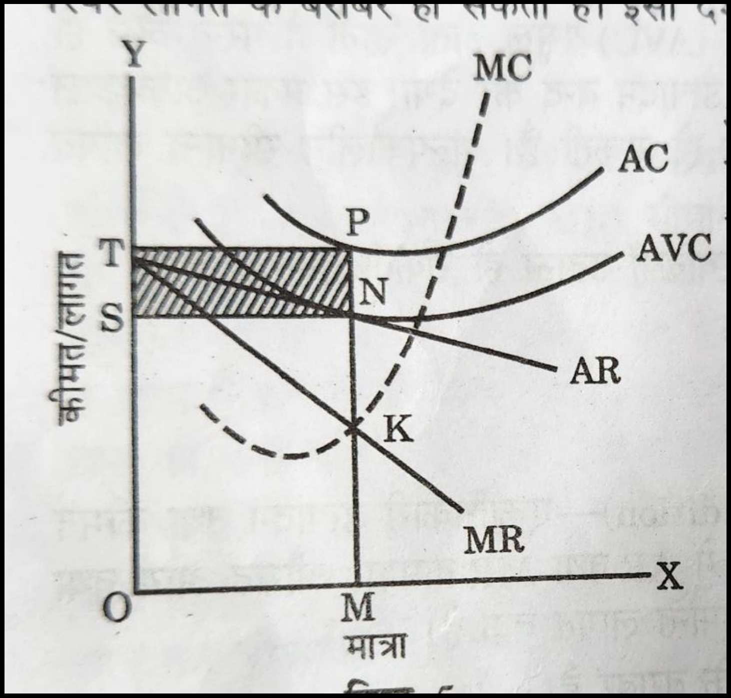

दीर्घकाल में एकाधिकारी का संतुलन

दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म आवश्यकता अनुसार उत्पादन के संसाधनों की मात्रा में परिवर्तन कर सकती है। फर्म अपने संयंत्र के आकार को छोटा या बढ़ा कर सकती है। इसीलिए दीर्घकाल में एकाधिकारी हानि की अवस्था में उत्पादन जारी नहीं रखेगा व उत्पादन बंद कर देगा। एकाधिकारी होने के कारण दीर्घकाल में इस प्रकार से व्यवस्था करेगा कि उसे असामान्य लाभ प्राप्त हो।

अतः दीर्घकाल में संतुलन के शर्तें निम्नलिखित होगी:-

- सीमांत लागत = सीमांत आगम (MC=MR)
- संतुलन के पश्चात सीमांत लागत सीमांत आय से अधिक हो
- कीमत औसत कुल आगम के समान या उससे अधिक हो

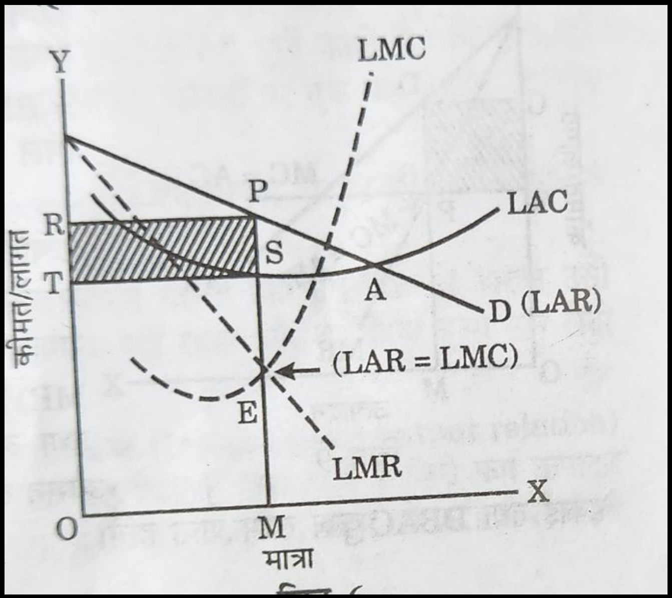

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE & SHARE
The Video
And
SUBSCRBE
YouTube CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com